पाठ-5

दाँत हैं तो जहान है

– **श्रीनिवास वत्स**

आइए सीखें

◆ हास्य व्यंग्य को पढ़ना और समझना ◆ मुहावरों का अर्थ समझकर वाक्यों में प्रयोग करना ◆ आगत शब्दों को समझना ◆ सही-सही विराम चिह्नों का प्रयोग करना।

शरीर के सभी अंगों का पृथक-पृथक विश्लेषण करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस पंचभूत शरीर में कुछ अंग ऐसे हैं जो महीने में एक-आध बार ही काम आते हैं। मैंने पूरे माह शरीर के प्रत्येक अंग द्वारा निष्पन्न कार्य का आँकड़ा तैयार किया और पाया कि यदि शरीर में एकाध अंग का बोझ कम हो भी जाए तो कोई अन्तर नहीं आएगा क्योंकि परमात्मा ने इसमें कुछ चीजें तो मात्र सजावट के लिए लगा रखी हैं। उदाहरणार्थ—बाल। अब आप ही बताओ क्या गंजे आदमी की कार्य-क्षमता किसी बालों वाले से कहीं भी कम है? फिर बाल हों या न हों कोई विशेष अन्तर तो पड़ता नहीं।

इसके विपरीत कुछ अंग ऐसे हैं जिनकी आवश्यकता हर क्षण बनी रहती है। लोग कहते हैं—आँखें हैं तो जहान है, परन्तु मेरे सर्वेक्षण में आँखों को इतना महत्व नहीं दिया जा सकता। आँखें सिर्फ देखने के काम आती हैं। मैंने दो-तिहाई उम्र इनसे काम ले लिया और इनसे जो-जो चीजें या हालात देखे, उन्हें देखकर इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि अब और कुछ देखने को जी नहीं चाहता। छल-फरेब से भरी दुनिया देख ली। शोषण देखा, अन्याय देख लिया। अब यदि एक तिहाई उम्र बिना कुछ देखे गुजर भी जाए तो क्या फर्क पड़ेगा। मैं शान्तिप्रिय आदमी हूँ, अत: कोई 'आँख दिखाता' भी है तो चुपचाप उसकी आँख देख लेता हूँ। समय के साथ लोग आँख फेर लेते हैं। सोचता हूँ यदि आँख न होती तो मुझे किसी की आँख क्यों देखनी पड़ती? भले ही कोई आँख फिरा लेता तो मुझे क्या फर्क पड़ता, लेकिन अब जब तक ये शरीर से चिपकी है तब तक अच्छा-बुरा सब कुछ देखना पड़ेगा।

मेरी तालिका में सर्वाधिक विशिष्ट अंग हैं—दाँत। जैसा कि नाम से ही इसके महत्व की सुगंध आती है। मेरी मान्यता है—दाँत हैं तो जहान है। जैसे साँप के दाँत निकाल दो, फिर साँप का सर्पत्व ही नष्ट हो जाएगा। कुत्ते के दाँत न हों तो वह कितना ही भौंकता रहे, कौन डरेगा? इसी तरह यदि मनुष्य के मुँह में

शिक्षण संकेत

◆ व्यंग्य लेखन शैली की विशेषताओं को समझाइए ◆ हिन्दी के अन्य व्यंग्य लेखकों की जानकारी दें।

दाँत नहीं तो उसका जीवन निरर्थक है। भले ही आप किसी को दाँतों से काटो मत पर इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव तो बना ही रहता है कि उसके मुँह में दाँत हैं। जब बन्दर घुड़की देता है तो वह दाँतों की लम्बाई-चौड़ाई दिखा देता है और घुड़की वाला प्राणी स्वत: दो-चार गज पीछे हट जाता है।

जिस आदमी के जितने लम्बे दाँत होते हैं, मैं उसे उतना ही आदर देता हूँ। लम्बे दाँत होने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे लोग उसके हँसमुख या रुदनमुख होने का अन्दाज नहीं लगा सकते। खुशी या गमी के अवसर पर उसको चेहरे के हाव-भाव बदलने की आवश्यकता नहीं। 'जाकी रही भावना जैसी' वाली बात यहाँ पूर्णरूपेण चरितार्थ हो जाती है। खुशी के अवसर पर आपको लम्बे दाँतों वाला आदमी न हँसते हुए भी हँसता नजर आएगा। इसी तरह शोक सभा में उसके दीर्घदन्त स्वत: रुदन का दरिया बहा देते हैं।

कहते हैं "हाथी के खाने के दाँत और" तथा "दिखाने के दाँत और" होते हैं। हाथी ने दाँतों के महत्व को समझा होगा, तभी तो दाँतों का 'डबल सेट' लगवाया है। जरूर उसने लम्बे दाँतों वाले मनुष्य से प्रेरणा लेकर ऐसा किया होगा। दाँतों के बिना मनुष्य न तो रो सकता है और न ही हँस सकता है। हमें जब भी किसी से कोई चीज माँगनी होती है तो पहले दाँत खिसकाकर हल्का मुस्कराना पड़ता है ताकि दाता प्रभावित हो। अब यदि दाँत ही नहीं होंगे तो खिसकाएँगे क्या?

ऐसे ही आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर दाँतों तले उँगली दबाना आवश्यक है। तात्पर्य हुआ आश्चर्यजनक दृश्य वही व्यक्ति देख सकता है जिसके मुँह में उँगली दबाने के लिए दाँत हों।

सर्दी का अंदाज दाँत किटकिटाने से लगता है। शीतलहर में लोग दाँत किटकिटाकर ठण्ड पर अपना गुस्सा झाड़ते हैं, पर जो बेचारे दन्तविहीन हैं वे इस सुख से भी वंचित रह गए।

लोग दाँतों में सोने-चाँदी के तार जुड़वाते हैं। यह इस बात का द्योतक है कि वे लोग अपने दाँतों को सोने-चाँदी से भी अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। फिर मानें क्यों नहीं? आखिर दाँत ही तो शरीर का सबसे वफादार अंग है।

आकार के अनुसार दाँतों के दो प्रकार हैं। प्रथम वे जो मुँह की परिसीमा में समाए रहते हैं तथा यदा-कदा ही ओठों से बाहर झाँकते हैं। दूसरे वे दीर्घदन्त हैं जिनके आवास हेतु ओठ छोटे पड़ते हैं तथा उन्हें अधिकतर समय ओठों से बाहर बिताना पड़ता है।

यद्यपि बोलने का सारा उत्तरदायित्व जीभ का है, परन्तु वह दाँतों से डरकर ही सही-सही बोलती है। दाँत टूटते ही मनुष्य के मुँह से अशुद्ध शब्द निकलने प्रारम्भ हो जाते हैं।

दाँतों को महत्वपूर्ण समझकर ही लड़ाई-झगड़े में प्रतिद्वन्द्वी सर्वदा पहले दाँत तोड़ने की बात करता है।

रही शरीर के बाकी अंगों की बात तो मुझे ऐसी कोई इन्द्रिय इतनी महत्वपूर्ण नज़र नहीं आ रही जो दाँतों का मुकाबला कर सके।

किसी ने कहा था, कुछ मनुष्य खाने के लिए जीते हैं तो कुछ जीने के लिए खाते हैं। घूम-फिरकर

बात तो एक ही हुई कि दोनों खाते हैं और खाने के लिए दाँत परम आवश्यक हैं।

बहुमत के आधार पर भी दाँत सर्वोपरि हैं। शरीर के अधिकतर अंग इकलौते हैं या फिर उनकी संख्या दो तक हो सकती है, पर दाँत संख्या में सर्वाधिक हैं।

हानि-लाभ की पूरी गणना के बाद अब परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान, भले ही मेरी आँख फोड़ दे, टाँग तोड़ दे पर इस बत्तीसी को सही सलामत बनाए रखे।

शब्दार्थ

पंचभूत शरीर=पृथ्वी, जल, आकाश, हवा व अग्नि से बना शरीर। **निष्पन्न**=किया गया। **विशिष्ट**=खास। **तालिका**=सूची। **एवमेव**=इसी तरह। **निरर्थक**=बेकार। **रुदन मुख**=रोता हुआ मुँह। **दीर्घ दन्त**=बड़े दाँत। **स्वतः**=अपने आप। **दरिया**=बड़ी नदी। **दन्त विहीन**=बिना दाँत के। **प्रतिद्वंद्वी**=विरोधी, प्रतिस्पर्धी। **सर्वोपरि**=सबसे ऊपर।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ियाँ बनाइए—

- पंचभूत – दन्त
- गंजा – लहर
- शीत – शरीर
- दीर्घ – आदमी

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- परमात्मा ने शरीर में कुछ चीजें मात्र .... के लिए लगा रखी हैं। (बनावट/सजावट)
- गंजे आदमी की कार्य क्षमता किसी बालों वाले से .... नहीं होती। (कम/अधिक)
- मेरे......... में आँखों को इतना महत्व नहीं दिया जा सकता। (निरीक्षण/सर्वेक्षण)
- मैंने छल-फरेब से .... दुनिया देख ली (भरी/खाली)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए—

(क) लेखक ने मनुष्य के अतिरिक्त किन-किन प्राणियों के दाँतों का उल्लेख किया है?

(ख) किसी से कुछ माँगने से पहले दाँत दिखाना क्यों आवश्यक है?

(ग) शीत लहर में लोग अपना गुस्सा कैसे झाड़ते हैं?

(घ) किस बात से पता चलता है कि लोग अपने दाँतों को सोने-चाँदी से अधिक महत्व देते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए—**
   (क) लेखक लम्बे दाँत वाले आदमी को अधिक आदर क्यों देता है?
   (ख) लेखक ने आकार के अनुसार दाँतों के कितने प्रकार बतलाए हैं?
   (ग) लेखक ने बालों को सजावट की चीज़ कहा है? इस कथन से आप कितने सहमत हैं?
   (घ) लेखक के अनुसार आँखों का महत्व कम क्यों है?
   (ङ) लेखक परमात्मा से क्या प्रार्थना करता है?

भाषा की बात

4. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—**
   पंचभूत, सर्वाधिक, विशिष्ट, प्रतिद्वंद्वी, परमात्मा।
5. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—**
   यध्यपि, भोंकना, कीटकीटाना, बत्तिसि, निश्पन्न।
6. **पाठ में आए इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**
   आँखें फेरना, आँखें दिखाना, दाँत खिसकाना, दाँतों तले उँगली दबाना, दाँत तोड़ना।
7. **'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और' कहावत का प्रयोग करते हुए एक वाक्य बनाइए।**
8. **इस पाठ में आया 'डबलसेट' शब्द अंग्रेजी भाषा का है, जिसे हिन्दी में ज्यों का त्यों प्रयोग किया गया है। हिन्दी में प्रयोग किए जाने वाले अंग्रेजी के पाँच शब्द लिखिए।**

अब करने की बारी

- 'कान हैं तो जहान है' विषय पर पाँच वाक्य लिखिए।
- नाक से सम्बन्धित कोई चार मुहावरे खोज़ कर लिखिए।
- अन्य व्यंग्य रचनाएँ खोजकर पढ़िए।
- हँसते हुए चेहरों की विभिन्न आकृतियाँ बनाइए।

❑❑